शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 3, pp (273-276), Month: Sep. 2018

धर्मवीर भारती की गद्य कृतियों में सामाजिक संरचना के रचना–घटक और भाषा

डॉ0 पूनम
एसोसिऐट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कनोहरलाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय मेरठ,

सारांश

धर्मवीर भारती की गद्य कृतियों में सामाजिक संरचना के रचना घटक भाषा को बहु आयामी तथा बहुस्तरीय बनाते हैं इनकी रचनाओं में एकल समाज, व्युत्पन्न या निष्चित समाज, सामाजिक समाज और इन समाज की भाशा प्रयोग को दर्शाया है। भाषा – प्रभेद गद्य रचनाओं में प्रयुक्त सामाजिक संरचना में साहित्य, शिक्षा, संस्कृति, शिल्प, राजनीति, वाणिज्य–व्यापार उद्योग, चिकित्सा, विधि और न्याय, विज्ञान और अभियात्रिंकी तथा प्रोद्योगिकी रचना घटक व भाषा का प्रयोग किया है।

धर्मवीर भारती की समस्त रचनाओं में पूजा, उपासना, प्रार्थना, शकुन, अपशकुन, टोना–टोटका, तीज–त्यौहार देवी–देवता, मंदिर तथा मस्जिद आदि संस्कृति के विभिन्न उपादानों का प्रयोग किया है इन्होंने परम्परावादी जीवन मूल्यों, सामाजिक सहिष्णुता, धार्मिक उदारता, सांस्कृतिक संशिलष्टता का परिचय दिया है।

सामाजिक संरचना और उसके रचना–घटक भाषा को बहुआयामी तथा बहुस्तरीय बनाते हैं। धर्मवीर भारती की गद्यकृतियों में समन्वित भाषायी समाज का प्रयोग हुआ है। संरचना स्तर पर इनकी गद्य रचनाओं में प्रयुक्त समाज को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता हैः–

1. एकल समाज।
2. व्युत्पन्न या मिश्र समाज।
3. सामासिक समाज।

समाज–भेद से इनकी गद्य रचनाओं में भाशा–प्रयोग के निम्नलिखित तीन रूप परिलक्षित होते हैः–

1. एकल भाषा।
2. व्युत्पन्न या मिश्र भाषा
3. सामासिक भाषा।

उपर्युक्त भाषा–प्रभेद गद्य रचनाओं में प्रयुक्त सामाजिक संरचना के विभिन्न

रचना–घटकों से नियंत्रित तथा निर्धारित हैं। धर्मवीर भारती की गद्य रचनाओं में सामाजिक संरचना के निम्नलिखित रचना–घटकों का प्रयोग हुआ है:–

1. साहित्य।
2. शिक्षा।
3. संस्कृति।
4. शिल्प।
5. राजनीति।
6. वाणिज्य–व्यापार।
7. उद्योग ।
8. चिकित्सा।
9. विधि और न्याय।
10. विज्ञान और अभियांत्रिकी।
11. प्रौद्योगिक।

उपर्युक्त सभी रचना–घटक विषय–वस्तु अथवा अध्ययन–सामग्री की दृष्टि से स्वतंत्र तथा पृथक महत्व रखते हैं। इनमें से प्रत्येक रचना घटक अपनी प्रकृति तथा प्रकार्यता के अनुरूप अलग–अलग भाषा प्रयोगों को जन्म देता हैं। शिक्षा और साहित्य की भाषा विषय भेद से अलग–अलग प्रयुक्त हुई हैं। धर्मवीर भारती ने अपनी गद्य रचनाओं में अध्यात्म, धर्म तथा दर्षन से अनुशासित शिक्षा और साहित्य के साथ–साथ भौतिकवादी परिवेश से प्रभावित साहित्य और शिक्षा से समबद्ध अलग–अलग भाषा रूपों का प्रयोग भी किया हैं। इनकी समस्त गद्य रचनाओं में पूजा, उपासना, प्रार्थना, शकुन–अपशकुन, टोना–टोटका, तीज–त्यौहार, देवी–देवता, मन्दिर तथा मस्जिद आदि संस्कृति के विभिन्न उपादानों का प्रयोग किया हैं। इनकी गद्य रचनाओं में इन सांस्कृतिक उपादानों से सम्बन्धित भाषा–रूपों का प्रयोग हुआ हैं। धर्मवीर भारती ने अपनी उपर्युक्त गद्यरचनाओं में राजनीति के विकृत तथा वीभत्स रूपों का तथा उनसे सम्बन्धित भाषा–प्रभेदों का विवेचन किया हैं। रचनाकार ने अपनी रचनाओं में अनेक स्थानों पर वाणिज्य तथा व्यापार के प्रभावों को भी व्यंजित किया हैं। इनसे सम्बन्धित समन्वित भाषा–रूपों का प्रयोग देहवादी संस्कृति को उद्घटित करता हैं। इनके उपन्यासों एकांकियों, कहानियों, निबन्धों तथा संस्मरणों में प्रकृति की विविधता, रमणीयता तथा रहस्यात्मकता के साथ–साथ विज्ञानबोध, चिकित्सा पद्धति, अभियांत्रिकी तथा प्रौद्योगिकी प्रगति का विवरण मिलता है। इन सबकी प्रकृति तथा प्रकार्यता के अनुरूप ही उपर्युक्त गद्य की विद्याओं में भाषायी विविधता परिलक्षित होती हैं। रचनाकार ने अपने यात्रा–वष्त (यात्रा–चक्र युद्ध यात्रा) में राजनैतिक, सामाजिक , सांस्कृतिक, षैक्षिक, साहित्यिक तथा दार्षनिक जीवन–मूल्यों की अभिव्यक्ति के साथ–साथ चीन, जर्मनी तथा ब्रिटेन आदि देशों की प्रौद्योगिकी का विवरण भी प्रस्तुत किया हैं। प्रौद्योगिकी के विविध आयामों से सम्बद्ध विदेशी भाशाओं से प्रभावित मानक हिन्दी का प्रयोग किया हैं। इन यात्रा वृतान्तों की

भाशा ज्ञानमूलक होने के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त तथा साहित्यिक अभिरूचि के अध्येता की जिज्ञासा को बढ़ाती तथा कम करती है परन्तु समाज के दलित वर्ग की भाषायी चेतना को प्रादुर्भूत नहीं कर पाती। इस प्रकार सामाजिक संरचना के विभिन्न रचना–घटकों से सम्बद्ध भाषा विभिन्न सामाजिक श्रेणियों तथा सामाजिक वर्गों को जन्म देती हैं। ''गुनाहों का देवता'' तथा ''सूरज का सातवां घोड़ा'' दोनों ही उपन्यास अपनी संरचना तथा प्रभाव प्रक्रिया में परम्परावादी जीवन–मूल्यों से अनुशासित हैं।

परम्परावादी जीवन मूल्यों को इस विवेचन से पुष्टि की जा सकती है।

1. ''भईया जै के भाग में लगड़ा लूला दा होई ओको ओही मिली। लड़कियन को निबाह करे चाही कि सकल देखे चाही। अबहिन ब्याह के बाद कौने के साथ गोड़ टूट गये जाये तो औरत अपने आदमी को छोड़ के गली–गाली की हांडी चाटे। हम रहे तो जब बिनती तीन बरस की हुई गयी। तब उनकी सकल उजेले में देखा रहा। जैसा भाग रहा तैसा होता।''

2. ''जमुना ने कहा – बैठो बातें करो माणिक, मालिक ने जमुना से कहा – बात क्यों टूट गयी जमुनाए हैं कैसी कुभाखा जिभ्या से निकालत हो जमुना की अम्मा रामधन बोला – बहू जी आप काहे जाने देने पर उतारु हो तो फिर क्या हो रामधन? तुम्हारी कोई जुगत बताओ। मालकिन एक ही जुगत है।''

भाषा की सामाजिक सहिष्णुता को इन कहानियों के माध्यम से पुष्ट किया जा सकता है। धर्मवीर भारती ने धर्म, अध्यात्म तथा दर्शन से सम्बन्धित अनेक पौराणिक कहानियों की रचना की हैं। कुबेर हरिनाकुस और उसका बेटा, अगला अवतार, कलंकित उपासना, नारी और निर्वाण, भूखा ईश्वर तथा पूजा ऐसी कहानियाँ हैं। जिनके अधिकांश पात्र रूढ़िवादी, पुराणपन्थी तथा अंधविश्वासी हैं। वे नियतिवाद, पूजा तथा उपासना की प्राचीन पद्धतियों में विश्वास करते हैं। यही कारण है कि इन पात्रों के संवाद की भाषा परम्परावादी जीवन–मूल्यों भाषा प्रयोगों को रचनाधर्मी बनाते हैं। परम्पराओं में निहित जड़ता तथा गतिहीनता भाषा–प्रयोगों को रूढ़ तथा ऊर्जा विहीन बनाती हैं। ऐसी भाशा वर्गबद्ध होकर सीमित तथा निश्चित सामाजिक क्षेत्र से सम्बद्ध हो जाती हैं। धर्मवीर भारती ऐसे रचनाकार है जो रूढ़ परम्पराओं, जड़ तथा गतिहीन जीवन मूल्यों को नकारते हैं। और उनसे प्रेरित तथा प्रभावित भाषा–प्रयोगों को अस्वीकारते हैं। उनकी दृष्टि में लोक विश्वास तथा लोक–आस्थाएँ परम्परावादी भारतीय संस्कृति के अविभाज्य अंग हैं। अतः पूजा, उपासना, भजन, कीर्तन, व्रत तथा उपवास भारतीय संस्कृति की पहचान कराने वाले रचना तत्व हैं। इन रचना तत्वों से सम्बद्ध भाशाएं सामाजिक सहिष्णुता, धार्मिक उदारता तथा सांस्कृतिक संशिलष्टता का परिचय देती हैं।

पर भूल नहीं पायी थी तो मैं क्षण–भर को मुझमें वही पहला–सा गुमान जागा। मैं कितनी भाग्यवान हूँ और फिर जैसे अपनी सारी कुरुपता, डरावनेपन, बीभत्सता के साथ मेरी असलियत मेरे सामने खड़ी हो गयी।

''तुम्हें माँ–बाप से क्या लेना देना। तुम तो मुझे वहाँ से ले आये ताकि तुम्हारे माँ'बाप, भाई–बहन को रोग न लग जाए। मेरे माँ–बाप, भाई बहन को रोग न लग जाए। मेरे माँ–बाप,

भाई–बहन चाहें गलकर मर जाएँ।'' उन पर जैसे पहाड़ टूटकर गिरा हो। पर मैं बेबस थी, आँखे जल रही थी मेरी, नथुने फूल आये थे और मैं जोर–जोर से चीख रही थी। कृकृकृकृकृ माँ दौड़ आयीं, ''सबित्तरा! सबित्तरा।''

''ऐ मर कलमुँहे।'' अकस्मात् घेघा बुआ ने कूड़ा फेंकने के लिए दरवाजा खोला और चौतरे पर बैठे मिखा को गाते हुए देखकर कहा, ''तोरे पेट में फोनोगिराफ उलियान बा का, जौन भिनसार भवा कि तान तोड़ै लगा? राम जौने, रात के कैसन एकरा दीदा लागत है।''

''बन्द गली का आखरी मकान, सावित्री नम्बर दो, गुलकी बन्नो तथा ये मेरे लिए नहीं हैं। ऐसी कहानियाँ है जो भाषाई संरचना में आस्थावादी तथा नियतिवादी सामाजिक मान्यताओं से नियंत्रित तथा निर्धारित हैं।

नदी प्यासी थी, सृष्टि का आखिरी आदमी तथा नीली झील ऐसे एकांकी हैं, जो अध्यात्म से अनुशासित विज्ञानवाद की पोषक हैं। इन एकांकियों में लोकआस्था, लोकविश्वास, विज्ञानबोध तथा आत्मबोध आदि से अनुशासित तथा नियंत्रित भाषा–रूपों का प्रयोग भी हुआ हैं। रचनाकार ने भौतिकतावादी संस्कृति से सम्बद्ध भाषा–प्रयोगों को विखराव तथा विखण्डनवादी भाषा–प्रयोगों से सम्बद्ध माना हैं। रचनाकार विध्वंसमूलक भाषा की अपेक्षा सृजनमूलक भाषा में विश्वास करता हैं। धर्मवीर भारती की गद्यरचनाओं में आधुनिक समाज तथा उससे अनुशासित भाषायी रूपों का प्रयोग मिलता हैं। रचनाकार की मान्यता है कि परम्परा से जुड़े पात्र भी वैचारिक तथा प्रयोग स्तर पर विज्ञानबोध से जुड़े रहते हैं। और इनकी भाषा भी वैज्ञानिक जीवन–मूल्यों को निरूपित करती हैं। चिकित्सा, उच्च षिक्षा, अभियांत्रिकी, उद्योग, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी आदि विषयों का कथ्य वस्तुवादी हैं। अतः इन अनुशासनों के कथ्य से अनुशासित भाषा आधुनिक जीवन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन विषयों से सम्बद्ध शब्दावली विशिष्ट प्रयुक्तियों को जन्म देती हैं। धर्मवीर भारती ने अपनी गद्यरचनाओं में संस्मरण साहित्य, यात्रा–चक्र तथा युद्ध–यात्रा आदि में विभिन्न देशों की सभ्यता, संस्कृति, समाज–व्यवस्था तथा तकनीक का वर्णन किया हैं। विदेशी समाज, संस्कृति तथा तकनीक से सम्बद्ध भाषा स्वतंत्र प्रयुक्तिमूलक बन गयी हैं। इन वस्तुनिष्ठ प्रयुक्त्यिों के बहुआयामी प्रयोगों से धर्मवीर भारती की गद्यकृतियों में प्रयुक्त हिन्दी सम्पन्न तथा समृद्ध ही नहीं बनी है। अपितु उदार, लचीली, संवेदनषील तथा स्पन्दनषील भी बन गयी हैं। इस प्रकार इनकी गद्यरचनाओं की भाषा विषय तथा प्रयुक्ति की प्रकृति तथा प्रकार्यता के अनुसार परम्परागत तथा आधुनिक जीवन–मूल्यों से अनुशासित हो गयी है।

सन्दर्भ सूची

1. गुनाहों का देवता, पृ० 232-233, भारतीय ज्ञान पीठ 1986
2. सूरज का सातवा घोड़ा, पृ० 69, भारतीय ज्ञान पीठ 1986
3. सावित्री नम्बर दो, पृ० 29, भारतीय ज्ञान पीठ 1962
4. सावित्री नम्बर दो, पृ० 32, भारतीय ज्ञान पीठ 1962
5. गुलकी बन्नो, पृ० 9, भारतीय ज्ञान पीठ 1995